THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

परिवर्तन पर प्रभुत्व
Dominion over change

Author – Rebeca Odegaard

Christian Science Sentinal Vol. 113, No. 52, 26 December 2011

हमारा जीवन बदलाव से भरपूर प्रतीत होता है। चाहे वह नौकरी बदलाना, घर बदलना, एक नए स्कूल में प्रवेश पाना, सेवानिवृति की शुरूआत करना या विवाहित जीवन के लिए अविवाहित जीवन छोड़ना, हममें से बहुत सारे कई तरह की बदलती परिस्थिति का सामना कर रहे हैं। यहां तक कि चर्च भी अपने आपको नएं ढंग से प्रस्तुत करने के लिए परिस्थितियों का सामना कर रही है। परिवर्तन के साथ अक्सर अस्त–व्यस्त करने का तथा असुविधा पैदा होने का डर बना रहता है, परन्तु ऐसा नहीं होता।

एक बार जब मैं पास आ रहे बदलाव पर विचार कर रही थी, मैंने समुद्र से एक बड़ा सबक लिया। मैं एक तूफान की लहरों के तीव्र होने पर आने वाली समुद्री चट्टान की रूकावट को देख रही थी। मैंने तर्क वितर्क किया कि सुन्दर प्राणी समान्यतः सतह के नजदीक समुद्री चट्टान पर निवास करते हुए ऐसे समय के दौरान इसके साथ हठ पूर्वक जुड़े नहीं रहते, वे अधिक गहराई में नीचे तैरते हैं जहाँ पानी कम उग्र होता है। संयोग, जो कि हमारे जीवन में बाहरी बदलाव लाते हैं वे अवसर बन सकते हैं सोच में सुरक्षित रखने का जो कि अपरिवर्तनिय तथा स्थिर है, हमारी समझ को सुदृढ़ करते हुए जो कि वास्तविक है।

" मैं दाता हूँ, मैं अपरिवर्तनिय हूँ " (मलाकी 3:6) एक अच्छा प्रारम्भिक बिन्दु है जिससे प्रार्थना करें जब हम किसी भी प्रकार के बदलाव के बारे में अस्थिरता महसूस करें। परमेश्वर की संतान होने के नाते, उसके बच्चे प्रतिबिम्ब के द्वारा स्थायी रूप से आध्यात्मिक हैं। जो कुछ भी परमेश्वर के बारे में सत्य है, उसकी रचना के बारे में सत्य है। इसका मतलब, क्यों कि हम परमेश्वर की उत्पति हैं, हम स्थायी रूप से खुश हैं, संतुष्ट हैं, प्रेम महसूस करते हैं, शांत हैं, प्रसन्नचित्त हैं। हम स्वामी से एक संकेत ले सकते हैं। क्राईस्ट जीसस निरन्तर परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के प्रति जागृत थे। वह लगातार प्रार्थना में परमेश्वर से परामार्श करते थे, और दूसरों को परमेश्वर के द्वारा संपोषित तथा अच्छाई से भरपूर देखते थे, उस आध्यात्मिक दृष्टकोण को पकड़ते हुए कि कैसे उसकी सत्ता ने कईयों को बीमारी, पाप और साथ ही साथ मृत्यु के ऊपर उठा दिया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को अपने पिता की रचना के एक अपरिवर्तनिय प्रकटीकरण के रूप में देखा, सदा प्रिय तथा सम्पूर्ण, और बीमारी, पाप तथा मृत्यु को झूठे अवरोध की तरह, जिन्हें परमेश्वर की उपचारक उपस्थिती के द्वारा मिटाया जा सकता है। कोई भी असली खतरे में नहीं रहा, अपितु प्रत्येक ने अपनी मौलिक परमेश्वर समरूपता को बनाए रखा।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

अपने कार्यकाल के सबसे ज्यादा कठिन तथा नाटकीय क्षणों में भी, क्राईस्ट जीसस आध्यात्मिक रूप से संतुलित थे। वह संकट के समय मौखिक बचाव को रोक पाए और निःस्वार्थ भाव से उनकी माफी के लिए प्रार्थना कर पाए जिन्होंने उनको सूली पर चढ़ा दिया। यह निश्चित रूप से इबरानियों में बताए गए इस कथन का प्रमाण है : "जीसस क्राईस्ट कल, आज , और सदा–सर्वदा एक समान है।" (13:8)

जैसे ही हम अधिक गहराई में जाते हैं और अच्छाई की अपरिवर्तनीय वास्तविकता को देखते हैं जो कि हमारा वास्तविक अस्तित्व है, हमें पता चलता है कि हममें आनन्दमयी खोज के विचार, अच्छाई की अपेक्षा, लचीलापन तथा आराम शामिल हैं। मेरी बेकर एडी इस सवाल का जवाब देते हुए "मानव क्या है?" घोषित करती हैं कि मानव–अर्थात **परमेश्वर** के विचारों में हर एक, सभी सही विचारों को सम्मिलित करता है, तथा आगे कहती हैं कि इस आध्यात्मिक रूप तथा प्रतिरूप के "पास ऐसा कोई गुण नहीं है जो इश्वर से उत्पन्न न हुआ हो " (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 475)।

क्योंकि **परमेश्वर** पूर्ण रूप से अच्छा है, **उसके** प्रयोजन में हमारे लिए सब कुछ अच्छा है। मुझे बार–बार इस आध्यात्मिक तथ्य पर भरोसा करना था।

कई साल पहले, मैंने एक बड़े स्थान–परिवर्तन का सामना किया, जब कि मैं अपने चुनिंदा कार्य, क्रिश्चियन साँयस प्रैक्टीशनर के रूप में स्थापित हो रही थी। वास्तव में मैं लगभग एक साल से प्रैक्टिस कर रही थी जब मेरे पति ने मुझे फोन किया तथा मूझसे पूछा कि मैं ऑस्ट्रेलिया में स्थान परिवर्तन करने पर कैसा महसूस करूँगी। हम पहले ही एक दम्पत्ति की तरह तथा युवा परिवार के रूप में कई बार स्थान परिवर्तन कर चुके थे, और मैं हमेशा ऐसा करने के लिए काफी ज़्यादा इच्छुक रहती थी, परन्तु इस बार मेरी इच्छा नहीं थी। मैंने पाया कि मुझे उसे जाने देना था जो सामान्य था, और जिसका मैं चित्रण कर चुकी थी, और **परमेश्वर** पर ज्यादा भरोसा करना था। मैंने एक सरल कानून पर निर्भर किया : "...जो कुछ भी एक को आशीषित करता है सबको आशीषित करता है..." (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 206)। यह मेरे पति के लिए स्पष्ट रूप से एक अच्छा कदम था, और मैंने हमारे बच्चों के लिए इसके लाभ देखे। मुझे इस तथ्य के साथ सहमत होने की आवश्यकता थी कि **परमेश्वर** का प्रेम विस्तृत है तथा हर एक को शामिल करता है। और यह एसा ही प्रमाणित हुआ।

परमेश्वर का विश्वास करते हुए, डर तथा नश्वर आयोजनों को छोड़ते हूए, हमेशा आध्यात्मिक विकास होता है जो की आशीषों से पहचाना जाता है। इस प्रकार का विश्वास निरर्थक नहीं है, अपितु ज्ञानपूर्ण तथा व्यवहारिक है। परिवर्तन पर प्रभुत्व का अभ्यास करते हुए अनुग्रह प्रकट होता है तथा क्राईस्ट की नम्र सत्ता प्रयोग की जाती है। यह प्रभुत्व इस तथ्य की स्वीकृति में गहन रूप से आधारित है कि **परमेश्वर परमेश्वर** ही होता है, तथा सारा संचालन, नियंत्रण, आपूर्ति, तथा देख–रेख कर रहा है। हमें अपने जीवन का सूक्ष्म प्रबन्धन नहीं करना है जब हम समझ जाते हैं कि **जीवन परमेश्वर** है, और हम उस एक सम्पूर्ण **जीवन** की अलग न होने वाली अभिव्यक्ति हैं।

अभी हाल ही में, मैं एक नई निर्मित हूई जगह में एक पूरे दिन वाली सभा का आयोजन कर रही थी। हम यहाँ पर पहला सबसे बड़ा समूह सभा करने वाला था, इसलिए यहाँ पर कुछ अनजान व्यक्ति थे। इस सभा के लिए प्रार्थना करते हुए तथा अवसर की तैयारी करते हुए मैंने सोच में वह रखा जो श्रीमति एडी ने अपनी आत्मकथा रैटरोस्पैक्शन एण्ड इन्टरोस्पैक्शन में क्राईस्ट जीसस के बारे में लिखा था, : "जब वह उनके साथ थे, एक मछली पकड़ने वाली नाव एक पुण्य स्थान बन गई, और एकान्त स्थान **सर्व–पिता** की ओर से आने वाले पवित्र संदेशों के साथ आबाद हो गया। उपवन उसका कक्षा–कक्ष बन गए, तथा प्राकृति का बसेरा मसीहा का विश्वविद्यालय " (पृष्ठ–91)। मैंने तर्क किया कि दिन का सार साथ ही साथ

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

वातावरण का सार **परमेश्वर** के अधिकार क्षेत्र में था। यदि कोई चीज़ साधारण हो तथा पूरी तरह से सत्कारयोग्य न हो, जिस प्रकार एक मछली पकड़ने वाली नाव क्राईस्ट की उपस्थिति में एक पुण्य स्थान बन सकती थी, तब निश्चित रूप से यह सुनिश्चित सभा वाला स्थान हमारी सभा को आशीषित करेगा, और बदले में, सभा हमारे मेज़बानों के लिए आशीष बन जाएगी।

हमें अपने जीवन का सूक्ष्म प्रबंधन नहीं करना है जब हम समझ जाते हैं कि जीवन परमेश्वर है, और हम उस एक सम्पूर्ण जीवन की अलग न होने वाली अभिव्यक्ति हैं।

सभा से एक दिन पहले, मैं भवन में गई और मुझे बताया गया कि सभाभवन की लाइटें काम नहीं कर रही थीं, और सभा के समय तक उनको कार्यरत करना असंभव था। यह एक गलत अवस्था थी। मैंने ऊपर सुन्दर, हलांकि ठण्डे हल्के साज़ सामान की तरफ़ देखा जो कि कमरे में लटक रहे थे और प्रार्थना की, जानते हुए कि कोई हल तो होगा। उसी क्षण मुझे बताया गया कि शहर में कोई बिजली मिस्त्री शुक्रवार की दोपहर को नहीं आएगा चूंकि यह यहूदियों की सप्ताहांत छुट्टी का आरम्भ था। अचानक एक ठेकेदार का नाम मेरे मन में आया, जिसे मेरे पति और मैंने सालों पहले एक प्रोजैक्ट के लिए प्रयोग किया था। उसका पूरा नाम मेरे मन में आया, जबकि काम के दौरान जब उसने हमारे लिए काम किया था मैं सोचती थी मुझे केवल उसका पहला नाम ही पता था। फोन में नामों को ढूँढते हुए वह मुझे मिल गया, जो कि असंभव प्रतीत होता था उस समय के दौरान जब उसने हमारे लिए काम किया था। मैं इतनी अचंभित हुई जब उसने फोन उठा लिया कि मेरे लिए बोलना मुश्किल हो गया। मैंने मुश्किल से उसको परिस्थिति के बारे में समझाना शूरू किया ही था कि जब उसने कहा "आपके पास एक घण्टे में कोई आ जाएगा।" बिजली मिस्त्री आ गया, भारी ट्रैफिक में शहर के एक और हिस्से में एक पुर्जे को लेने गया और उसे लगाने के लिए वापिस आ गया। उस शाम के लगभग छः बजे मैंने सभाभवन से एक फोटो–युक्त ई–मेल प्राप्त की।

निश्चित रूप से हम उन घटनाओं का स्वागत कर सकते हैं जो हमें आध्यात्मिक तथा सहज **जीवन** को और ज्यादा खोजने के लिए प्रोत्साहित करें जिसे हम व्यक्त करते हैं। अपनी चर्च के संदेश में श्रीमति एडी ने लिखा : "....जीसस कहते हैं : 'मुझ तक आओ।' हे उत्कृष्ट आशा! यहाँ धार्मिक के लिए कुछ स्थिरता बची है, क्राईस्ट में एक स्थिरता, **प्रेम** में एक शांति। इसकी सोच शिकायत को शाँत कर देती है, जीवन के अशान्त समुद्र की लहरती हुई तरंगे स्वयं को बहा ले जाती हैं, तथा नीचे एक अथाह शांति बस जाती है " (मैसेज टू दि मदर चर्च फॉर 1902, पृष्ठ 19)।

यह आध्यात्मिक दृष्टकोण है जो सबसे पहले चुनौतीपूर्ण दिखने वाले परिवर्तन को समन्वित करता है और उसके स्थान पर हमें **परमेश्वर** के सामंजस्य, निरन्तर अच्छाई को देखने के योग्य बनाता है।

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.